Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – II (कला वर्ग)

भाग – 1

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

1. मनोविज्ञान 1
   - सामान्य परिचय, परिभाषाएं, शाखाएं

2. बाल विकास 6
   - परिचय, परिभाषाएं
   - वृद्धि एवं विकास, सिद्धान्त एवं आयाम
   - प्रभावित करने वाले कारक
   - अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

3. विकास की अवस्थाएं 19

4. अधिगम एवं अभिप्रेरणा 50
   - परिचय, प्रक्रियाएं
   - प्रभावित करने वाले कारक इत्यादि
   - बालकों में चिंतन एवं अधिगम
   - अभिप्रेरणा एवं अधिगम

5. मानसिक स्वास्थ्य व समायोजन 85
   - परिचय, सकल्पना, प्रकार
   - समायोजन प्रतिमान इत्यादि

6. बुद्धि 96
   - परिभाषाएं, प्रकार, सिद्धान्त एवं मापन
   - बहु आयामी
   - संवेगात्मक बुद्धि इत्यादि

7. व्यक्तित्व 113
   - परिचय, प्रकार, प्रभावित करने वाले कारक
   - व्यक्तित्व मापन, साक्षात्कार
   - व्यक्तित्व विभिन्नता
   - प्रकार, पहचान, भाषा इत्यादि

8. शिक्षा का अधिकार 146
- परिचय
- विभिन्न धाराएं
- विद्यालय एवं मानक

9. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 154
10. क्रियात्मक अनुसंधान 161
11. मूल्यांकन 164
12. CCE सतत् मूल्यांकन 169

मनोविज्ञान

→ मनोविज्ञान का अतित बहुत लम्बा है जबकि इतिहास बहुत छोटा है ऐसा एबिंगहास का कथन है।

→ मनोविज्ञान का अतित 400 ई.पू. से प्रारम्भ होता है जबकी इतिहास 16वी शताब्दी से प्रारम्भ होता है।

→ सर्वप्रथम मनोविज्ञान शब्द का प्रयोग 1590 मे रुडोल्फ गोयकर ने अपनी पुस्तक Psychologia के अन्तर्गत किया।

→ मनोविज्ञान के जनक - अरस्तु तथा जननी है - दर्शनशास्त्र

→ शताब्दियो पूर्व मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र कि एक शाखा के रूप में माना जाता था।

→ मनोविज्ञान को स्वतन्त्र विषय बनाने के लिए इसे परिभाषित करना शुरू किया गया।

→ Psychology शब्द कि उत्पति लैटिन (1st Priority) व यूनानी (2nd) (ग्रीक) भाषा के दो शब्दो Psyche + Logos से मिलकर हुई है

Psyche का अर्थ होता है - आत्मा का तथा
Logos का अर्थ होता है - अध्ययन करना / विज्ञान

→ इसी शाब्दीक अर्थ के आधार पर सर्वप्रथम प्लेटो, अरस्तु, डेकार्टे आदी के द्वारा मनोविज्ञान को "आत्मा का विज्ञान" माना गया।

आत्मा शब्द कि स्पष्ट व्याख्या नही होने के कारण 16 वी शताब्दी के अन्त मे यह परिभाषा अमान्य हो गई।

- 17 वी शताब्दी मे इटली के मनोवैज्ञानिक पोम्पोनोजी ने मनोविज्ञान को मन या मस्तिष्क का विज्ञान माना बाद मे यह परिभाषा भी अमान्य हो गई।

- 19 वी शताब्दी मे विलियम वुण्ट, विलियम जेम्स, वाइन्स जेम्स सली के आदि के द्वारा मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान माना गया। अपूर्ण अर्थ होने के कारण यह परिभाषा भी अमान्य हो गई।

- विलियम वुण्ट ने जर्मनी के लिपजिंग स्थान पर 1879 में प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापीत की इसलिए विलियम वुण्ट को प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जनक माना जाता है।

- इसी समय मे (1879 से) मनोविज्ञान दर्शनिशास्त्र कि शाखा के रूप से अलग होकर स्वतन्त्र विषय के रूप मे सामने आया।

- लिपजिंग विश्वविद्यालय को वर्तमान में "कार्ल-मार्क्स" विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है।

- विलियम मैक्डुगल ने अपनी पुस्तक Outling Psychology के पृष्ठ न. 16 पर चेतना शब्द की कड़ी निंदा की।

→ 20 वी शताब्दी में मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान माना गया और आज-तक यही परिभाषा प्रचलित है।

→ व्यवहार का विज्ञान मानने वाले प्रमुख मनोवैज्ञानिक वाटसन हैं। इसके अलावा वुडवर्थ, स्किनर, थॉर्नडाईक, मैक्डुगल आदि के द्वारा भी मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान माना गया।

→ व्यवहार वाद के जनक हैं वाटसन तथा व्यवहारवादी वंशानुक्रम में कम विश्वास करते हैं तथा वातावरण में अधिक इसीलिए वाटसन ने कहा "तुम मुझे कोई भी बालक दे दो मै उसे वैसा बना सकता हूँ जैसा मैं बनाना चाहता हूँ"

- वुडवर्थ के अनुसार :→

मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का त्याग किया फीर मन का त्याग किया, फीर चेतना का त्याग किया और आज मनोविज्ञान व्यवहार कि विधि के स्वरूप को स्वीकार करता है।

- क्रो एव क्रो के अनुसार :→

20 वी शताब्दी बच्चे कि शताब्दी है।

नोट :→

- वर्तमान समय में मनोविज्ञान को व्यवहार व अनुभूति का विज्ञान माना जाता है।

प्रमुख जनक -

- मनोविज्ञान के जनक - अरस्तु

शिक्षा मनोविज्ञान के जनक - थार्नडाइक

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के जनक - विलियम वुण्ट

आधुनिक मनोविज्ञान के जनक - विलियम वुण्ट

अमेरिकन मनोविज्ञान के जनक - विलियम जेम्स

विकासात्मक मनोविज्ञान के जनक - जीन प्याजे

किशोर मनोविज्ञान के जनक - स्टेनली हॉल

व्यक्तित्व मनोविज्ञान के जनक - ~~स्ह~~ ऑलपोर्ट

मूल-प्रवृति के जनक - मैक्डुगल

मौलिक व्यवहारवादी के जनक - स्किनर

* मनोविज्ञान शब्द - 1st लेटिन 2nd यूनान

* मनोविज्ञान की मुख्य शाखाएँ *

1 सामान्य मनोविज्ञान - सामान्य बालको का अध्ययन

2. असमान्य मनोविज्ञान - असमान्य बालको का अध्ययन

3. तुलनात्मक मनोविज्ञान सामान्य / असमान्य

4. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान - नियंत्रित परिस्थितियो मे किया गया अध्ययन

5. समाज / सामाजिक मनोविज्ञान

6 औद्योगिक मनोविज्ञान

7. बाल मनोविज्ञान / बाल विकास (गर्भावस्था - किशोरावस्था)

8. किशोर मनोविज्ञान

9. प्रौढ मनोविज्ञान

10 विकासात्मक मनोविज्ञान (शुरु से अन्त) गर्भावस्था - वृद्धावस्था तक का अध्ययन

11 शिक्षा मनोविज्ञान - बालक के व्यवहार का शैक्षिक परिस्थितियो मे अध्ययन

12 निदानात्मक / उपचारात्मक / क्लिनिकल मनोविज्ञान - समस्यात्मक बालको का अध्ययन

13. पशु मनोविज्ञान

14 परा मनोविज्ञान (आधुनिक शाखा) - उलझी हुई गुत्थीयो पर चर्चा

जैसे - पुनः जन्म कि बाते याद आना
गत घटना का सपना पहले ही आ जाना

समस्या के कारण को जानना - निदान
समस्या को दूर करना - उपचार

बालक विकास

18 वी शताब्दी मे सर्वप्रथम 'पेस्तोलोजी' के द्वारा बालविकास का वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत किया गया। इन्होंने अपने की $3\frac{1}{2}$ वर्ष के पुत्र पर अध्ययन किया तथा Baby Biography तैयार कि।

- 19 वी शताब्दी मे अमेरिका मे बाल अध्ययन आन्दोलन कि शुरुआत हुई इसके जन्मदाता "स्टेनली काल" इन्होंने अमेरिका मे Child Study Society व Child welfare organisation जैसी संस्थाओं कि स्थापना कि।

- 19 वी शताब्दी मे कि न्युयोर्क मे सबसे पहला बाल सुधार गृह सन 1848 स्थापित किया।

- 20 वी शताब्दी मे बालविकास पर अनेक पुस्तको का प्रकाशन किया गया।

- भारत मे बालविकास के अध्ययन कि शुरुआत लगभग 1930 से मानी जाती है।

वृद्धि और विकास

अभिवृद्धि एवं विकास का आशय स्थिर, अनुकूल, प्रभावी तथा सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास है । अभिवृद्धि एवं विकास के लिए वंशानुक्रम एवं वातावरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है । वंशानुक्रम द्वारा व्यक्ति को जो भी प्राप्त होता है, वातावरण उसे परिमार्जित कर प्रभावित करता है ।

अभिवृद्धि व विकास की प्रक्रियाएं उस समय से प्रारंभ हो जाती है जब से बालक का बीजारोपण होता है तथा उसके जन्म के बाद से निरन्तर शारीरिक, मानसिक, सामाजिक पक्ष आदि का विकास होता है ।

अध्यापक को बालक की अभिवृद्धि एवं उसके साथ होने वाले विभिन्न प्रकार के विकास तथा उसकी विशेषताओं का ज्ञान होना आवश्यक है तभी वह शिक्षा की योजना का क्रियान्वयन सही तरीके से कर सकता है ।

वृद्धिः वृद्धि से तात्पर्य शरीर के आकार में वृद्धि से है । वजन, लम्बाई और आंतरिक अंगो के आकार का बढना ही वृद्धि है ।

सोरेन्सन के अनुसार – सामान्य रूप से अभिवृद्धि शब्द का प्रयोग शरीर और उसके अंगो के भार और आकार में वृद्धि के लिए किया जाता है । इस वृद्धि का मापन किया जा सकता है ।

वृद्धि एक क्रमिक प्रक्रिया होती है । शैशवावस्था में वृद्धि तीव्र, बाल्यावस्था में मन्द व 11 वर्ष की आयु में वृद्धि तीव्र हो जाती है । परिपक्वता प्राप्त होने पर अभिवृद्धि रूक जाती है । आकार में वृद्धि के अतिरिक्त शरीर में अन्य परिवर्तन भी होते है । इनमें शरी के अंगो के रूप में परिवर्तन, उनकी जटिलता और प्रकार्यो में वृद्धि और सोचने – समझने की योग्यताओं व सामाजिक कौशलों में वृद्धि शामिल है । दूसरे शब्दों में हमारी मात्र वृद्धि की नहीं होती बल्कि विकास भी होता है ।

अभिवृद्धि और विकास में अंतर

अभिवृद्धि	विकास
• वृद्धि की प्रक्रिया एक ऐसी प्रक्रिया है जो सम्पूर्ण जीवनभर न चलकर एक विशेष आयु तक ही जारी रहती है । उसके पश्चात शारीरिक वृद्धि रूक जाती है	विकास की प्रक्रिया एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया होती है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है । यह शारीरिक परिपक्वता ग्रहण करने के बाद भी जारी रहती है ।
• वृद्धि शब्द का प्रयोग अधिकतर परिमाण या मात्रा में होने वाले परिवर्तनों के लिए किया जाता है ।	विकास शब्द न केवल मात्रा या परिमाण संबंधी परिवर्तनों के लिए प्रयोग होता है बल्कि यह बालक के व्यक्तित्व के सभी पक्षों मे उन्नति के लिए प्रयुक्त होता है ।
• वृद्धि की प्रक्रिया को विकास की संपूर्ण प्रक्रिया का एक चरण कहा जाता है	वृद्धि इस प्रक्रिया की ही एक उप प्रक्रिया कही जाती है जिसमें सभी प्रकार के उन्नति शामिल रहती है ।
• वृद्धि शब्द शरीर के किसी एक पक्ष में होने वाले परिवर्तनों को प्रदर्शित करता है ।	विकास शब्द व्यक्ति के व्यक्तित्व में संपूर्ण परिवर्तनों को संयुक्त रूप से प्रकट करता है ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

नोट :- रचनात्मक परिवर्तन में व्यक्ति को किशोरावस्था कि ओर ले जाते हैं जबकि विनाशात्मक परिवर्तन व्यक्ति को वृद्धा अवस्था कि ओर ले जाते हैं

* विकास कि परिभाषाए *

गैसेल के अनुसार - विकास एक तरह का परिवर्तन है जिसके द्वारा बालक मे नवीन योग्यता ओ व विशेषताओ का विकास होता है।

ब्रूनर के अनुसार - विकास कि किसी भी अवस्था मे कुछ भी सिखाया जा सकता है

बर्क के अनुसार - बाल विकास मनोविज्ञान कि वह शाखा है जिसके अन्तर्गत जन्म पूर्व अर्थात गर्भावस्था से किशोरावस्था अथवा परिपक्वा अवस्था तक होने वाले विकास का अध्ययन किया जाता है

Toppersnotes
Unleash the topper in you

श्रीमती हरलॉक -

श्रीमती हरलॉक ने विकास क्रम में होने वाले परिवर्तनो को चार भागो में बांटा

1. आकार में परिवर्तन — नवजात शिशु के सिर का अनुपात = 1/4
2. अनुपात में परिवर्तन — व्यस्क मनुष्य के सिर का शरीर से अनुपात = 1/7
3. पुराने चिह्नो का लोप
4. नवीन चिह्नो का उदय

* विकास के नियम ⇒

(1) समान प्रतिमान का नियम - विकास समान नियमो पर आधारित होता है इसमें किसी प्रकार का भेदभाव नही होता
(बच्चा रेंगकर चलेगा, पकड़कर खड़ा होगा, फिर चलेगा)

(2) क्रमबद्धता का नियम / निश्चित श्रृंखला का नियम -

- विकास क्रमानुसार होता है (बच्चे का बोलना - प--पा....पापा)

(3) सतत विकास का नियम / निरन्तरता का नियम -

- विकास जीवन पर्यन्त चलता रहता है

(4) परस्पर संबध का नियम -

विकास के चारो पक्ष (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, व संवेगात्मक) परस्पर संबंधित होते है लेकिन घनिष्ठ संबध शारीरिक व मानसिक विकास में होता है

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(5) सामान्य से विशिष्ट क्रियाओं का नियम - शिशु पहले सामान्य क्रियाएं करता है व उसके बाद विशिष्ट।
उदा. शिशु का किसी चीज का पकड़ना - यह जन्म से नहीं होता)

(6) निश्चित दिशा का नियम -

(i) मस्तकोधमुखी नियम :- विकास हमेशा सिर से पैर कि ओर अर्थात् ऊपर से नीचे कि ओर होता है।
(सिर → धड़ → हाथ → पैर)

(ii) निकट-दूर नियम :- विकास के केन्द्र से शिरो कि ओर होता है जैसे - पहले हथेली फिर अंगुलिया व उसके बाद अंगुठे का प्रयोग।

(7) व्यक्तिगत विभिन्नता का नियम - जन्म से ही कोई बालक प्रतिभाशाली होता है कोई सामान्य बुद्धि होता है तो कोई मन्द बुद्धि होता है।

(8) विकास कि गति में भिन्नता का नियम -

प्रतिभाशाली बालक का विकास तीव्र गति से, सामान्य बुद्धि बालक का सामान्य गति से तथा मन्द बुद्धि बालक का विकास मन्द गति से होता है।

(9) अन्त: क्रिया का नियम - देखकर, सुनकर व अनुकरण से सिखना
दूसरा बच्चा जल्दी / तीव्र से सिखता है।

(10) वर्तुलाकार का नियम - विकास केवल लम्बाई मे न होकर अर्थात् रेखीय न होकर, चारो ओर होता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(11) विकास मे परिवर्तन का नियम

(12) पूर्वानुमान / पूर्व कथन / भविष्यवाणी का नियम

(13) विकास कि प्रत्येक अवस्था के अपने -2 खतरे होते है।

(14) विकास कि प्रत्येक अवस्था मे सुख शान्ती एक समान नही होती है।

(15) प्रारम्भिक विकास परवर्ती (बाद वाले) कि अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होता है।

(16) वंशानुक्रम व वातावरण के गुणनफल का नियम -

- व्यक्ति का विकास वंशानुक्रम व वातावरण का प्रतिफल है।

| व्यक्ति = वंशानुक्रम (H) × वातावरण (E) | — वुडवर्थ

विकास के सिद्धान्त ये निम्न है –

- विकास की दिशा या क्रमबद्धता का सिद्धांत – शारीरिक और क्रियात्मक विकास दो दिशाओं में होता ळें एक दिशा है मस्तकाधोमुखी दिशा या सिर–से–पैर की दिशा । विकास सिर से पैर की दिशा में होता है। दूसरे शब्दों में, संरचना और प्रकार्यों में सुधार सर्वप्रथम सिर वाले हिस्से में होता है, तत्पश्चात धड में यह सुधार होता है और अंततः सुधार टाँगों वाले क्षेत्र में होता है । यह सिद्धांत प्रसव–पूर्व (जन्म से पूर्व) तथा प्रसवोपरांत (जन्म के बाद) विकास, दोनों में लागू होता है। भ्रूणावस्था से लेकर मानव विकास की बाद की अवस्था में विकास का यही क्रम रहता है ।
- विकास की गति की अनियमितता का सिद्धान्त– किसी भी प्राणी का विकास सदैव एक ही गति से आगे नहीं बढता है, उसमें निरन्तर उतार–चढाव होते रहते हैं उदाहरण के लिए– विकास की प्रारंभिक अवस्था में यह गति तीव्र रहती है उसके बाद में मंद पड जाती है । यद्यपि शारीरिक व मानसिक विकास । दोनों की प्रक्रिया निरंतर होती है किन्तु विभिन्न अंगों/भागों के लिए इसकी गति में भिन्नता पाई जाती है। जैसे–जैसे बच्चा बडा होता है प्रत्येक अंग/भाग का अपनी गति से विकास होत है तथा यह एक निश्चित समय पर परिपक्कता की अवस्था में पहुँचता है।
- विकास की प्रत्येक अवस्था की विशिष्टि विशेषताएं होती है – सामान्य रूप से जिस बच्चे के रूप मे हम कुछ नहीं जानते, उसकी जन्म तिथि के अनुसार आयु के आधार पर हम अनुमान लगा देते है ।

मनोवैज्ञानिक हेविंगहर्स्ट ने 6–2 वर्ष के बच्चों के लिए निम्न विकासात्मक कार्यों का सुझाव दिया है–

- सामान्य खेलों के लिए आवश्यक शारीरिक कौशल प्राप्त करना।
- विकासशील प्राणी के रूप में अपने बारे में हितकर अभिवृत्तियों को विकसित करना।
- अपनी आयु वर्ग के बच्चों के साथ रहना सीखना ।
- पढने, लिखने और गणना करने में स्थिरता के अनुसार । स्त्री–पुरुष के उचित कर्तव्यों को सीखना। ।
- दैनिक जीवन के लिए आवश्यक आधारभूत अवधारणाओं को विकसित करना। ।
- विवेक, नैतिकता तथा मूल्यों को विकसित करना । व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्राप्त करना

विकास अवस्थाओं के अनुसार होता है

सामान्य रूप से देखने पर ऐसा लगता है कि बालक का विकास रुक–रुक कर हो रहा है परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता है। उदाहरण के लिए जब बालक के दूध के दाँत निकलते है तो ऐसा लगता है कि एकाएक निकल आये परन्तु नींव गर्भावस्था पाँचवें माह में पड जाती है और 5–6 माह में ये दाँत बाहर आते है ।

व्यक्तिगत भिन्नताओं का सिद्धान्त

विकास की गति में वैयक्तिक भिन्नताएं – सभी बच्चों में विकास का एक विशिट अनुक्रम होता है। उदहारणतः क्रियात्यक विकास के अंतर्गत सभी बच्चे पहले करवट लेना, बैठना, घुटनों के बल चलना, दौडना, आदि क्रमशः सीखते है । प्रत्येक बालिका भी विकास की इन अवस्थाओं से गुजरती है। बच्चे ,भिन्न–भिन्न उम्र में ये क्षमता प्राप्त करते है । उदाहरणातः एक बालिका नौ माहीने में चलना आरंभ करे और दूसरी तेरह महीने की उम्र में ।

विकास की गति में लिंग संबंधी भिन्नताएँ–

लडको और लडकियों के विकास की गति में भिन्नताएँ होती है जन्मपूर्व में लडके की तुलना में लडकी समय बालिकाओं का कंकाल तंत्र बालकों की अपेक्षा अधिक विकसित होता है । लडकियों में यौवनारंभ लडकों से लगभग दो वर्ष पहले होता है ।

निर्णायक अवधि का सिद्धान्त

बालिका के जीवन में कुछ ऐसे समय होते है जो उसके विकास और ज्ञान के लिए निर्णायक होते है। इन अवधियों में यदि बालिका के अनुभव अनुकुल हों तो उसके विकास को प्रोत्साहन मिलेगा और प्रतिकूल अनुभव विकास में बाधक हो सकते है ।

निरन्तरता का सिद्धान्त

विकास सतत एवं निरन्तर चलने वाली एक अविराम प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया गर्भावस्था से प्रारम्भ होकर अनवरत रूप से जीवन–पर्यन्त चलती है । विकास की प्रत्येक अगली अवस्था अपनी पूर्व अवस्था पर आधारित होती है तथा इसका दृढ प्रभाव विकास की प्रत्येक अगली अवस्था पर पडता है

परस्पर संबंधता का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त से तात्पर्य है कि बालक के विभिन्न गुण परस्पर संबंधित होते है । एक गुण का विकास जिस प्रकार हो रहा है उसी अनुपात जैसे–तीव्र बुद्धि वाले बालक के मानासिक विकास के साथ ही शारीरिक एवं सामाजिक विकास भी तीव्र है। इसके विपरीत मन्द बुद्धि बालकों कां शारीरिक एवं मानसिक विकास भी मन्द होता है।

* विकास को प्रभावित करने वाले कारक *

(1) वंशानुक्रम :- यह विकास को प्रभावित करने वाला पहला प्रमुख कारक है। बालक को अपने माता पिता व पूर्वजो कि जो विशेषताएँ जन्म या गर्भाधान के समय से प्राप्त होती है उसे वंशानुक्रम या अनुवंशिकता कहते है।

* वंशानुक्रम के सिद्धान्त –

(1) बीजमैन का जनन - द्रव्य कि निरन्तरता का सिद्धान्त –

इस सिद्धान्त के अनुसार शरीर का निर्माण करने वाला जनन द्रव्य कभी भी नष्ट नही होता है यह पीढी दर पीढी हस्तान्तरित होता रहता है।
यही कारण है कि एक पीढी से दूसरी पीढी मे निरन्तर गुणो का संचरण होता रहता है।

(2) उपार्जित गुणो के असंचरण का सिद्धान्त :- (बीजमैन)

इस सिद्धान्त के अनुसार अर्जित गुणो का संचरण नही होता है।
इसके समर्थक - बीजमैन (चुहो कि पूछ काट दी गई)

(3) उपार्जित गुणो के संचरण का सिद्धान्त :- (लैमार्क)

इस सिद्धान्त के अनुसार अर्जित गुणो का संचरण होता है।
इसके समर्थक - लैमार्क (जीराफ कि गर्दन)

(4) गाल्टन का जीव - सांख्यिकी / बायोमेट्रिक सिद्धान्त :

इस सिद्धान्त के अनुसार बालक मे गुणो का संचरण केवल माता पिता से न होकर पूर्वजो से भी होता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⑤ मैण्डल का सिद्धान्त :-
मैण्डल ने काले व सफेद चुहो तथा मटर के पौधो पर प्रयोग करके यह निष्कर्ष निकाला कि एक ही माता-पिता से उत्पन्न संतानो मे भी भिन्नता पाई जाती है।

* वंशानुक्रम के नियम ⇒

① समानता का नियम - जैसे - माता - पिता वैसी ही संतान

② भिन्नता का नियम - जैसे - माता - पिता उनसे कुछ भिन्न संतान

③ प्रत्यागमन का नियम - जैसे - माता - पिता उनके ठीक विपरीत संतान

② वातावरण :-
यह विकास को प्रभावित करने वाला दूसरा प्रमुख कारक है। वातावरण का पर्यायवाची शब्द है 'पर्यावरण' जो कि दो शब्दो से मिलकर बना है। परि + आवरण

परि का अर्थ होता है - चारो ओर

आवरण का अर्थ होता है - ढकने वाला / घेरने वाला

अर्थात् वो कुछ भी हमे चारो ओर से घेरे हुए है वही पर्यावरण है।

नोट :- वातावरण के अन्तर्गत बालक एक उच्च संगठित उर्जा तंत्र है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

रॉस के अनुसार – वातावरण कोई बाहरी शक्ति है जो हमे प्रभावित करती है।

– वातावरण के अन्तर्गत निम्न कारक बालक के विकास को प्रभावित करते है।

① पारिवारिक वातावरण :–

परिवार अनोपचारिक शिक्षा का मुख्य साधन है। जिसके अन्तर्गत माँ कि महत्वपूर्ण भुमिका होती है। माँ बालक कि प्रथम गुरू होती है जिसके द्वारा संस्कारो कि शिक्षा दि जाती है।

फ्रोबेल के अनुसार – "माताए आदर्श अध्यापिकाएँ होती है। तथा परिवार द्वारा दी जाने वाली अनोपचारिक शिक्षा महत्वपूर्ण व प्रभावशाली है।"

पेस्तोलोजी के अनुसार – " परिवार सिखने का सर्वोत्तम स्थान व बालक का प्रथम विद्यालय है।

– पारिवारिक वातावरण के अन्तर्गत निम्न कारक आते है।

- परिवार कि आर्थिक स्थिति
- माता-पिता का असंतोषजनक वैवाहिक जीवन
- पक्षपात पुर्ण व्यवहार
- माता-पिता कि अत्यधिक ममता या लाड प्यार
- कठोर नियन्त्रण व अनुशासन आदी।